FINANCIAL EXPRESS ENGLISH
READ TO LEAD

अगर चौधरी चरण सिंह मान लेते TCS की बात, तो 1977 में ही आ जाता PAN कार्ड!

FE Online
December 10, 2018 7:06 AM

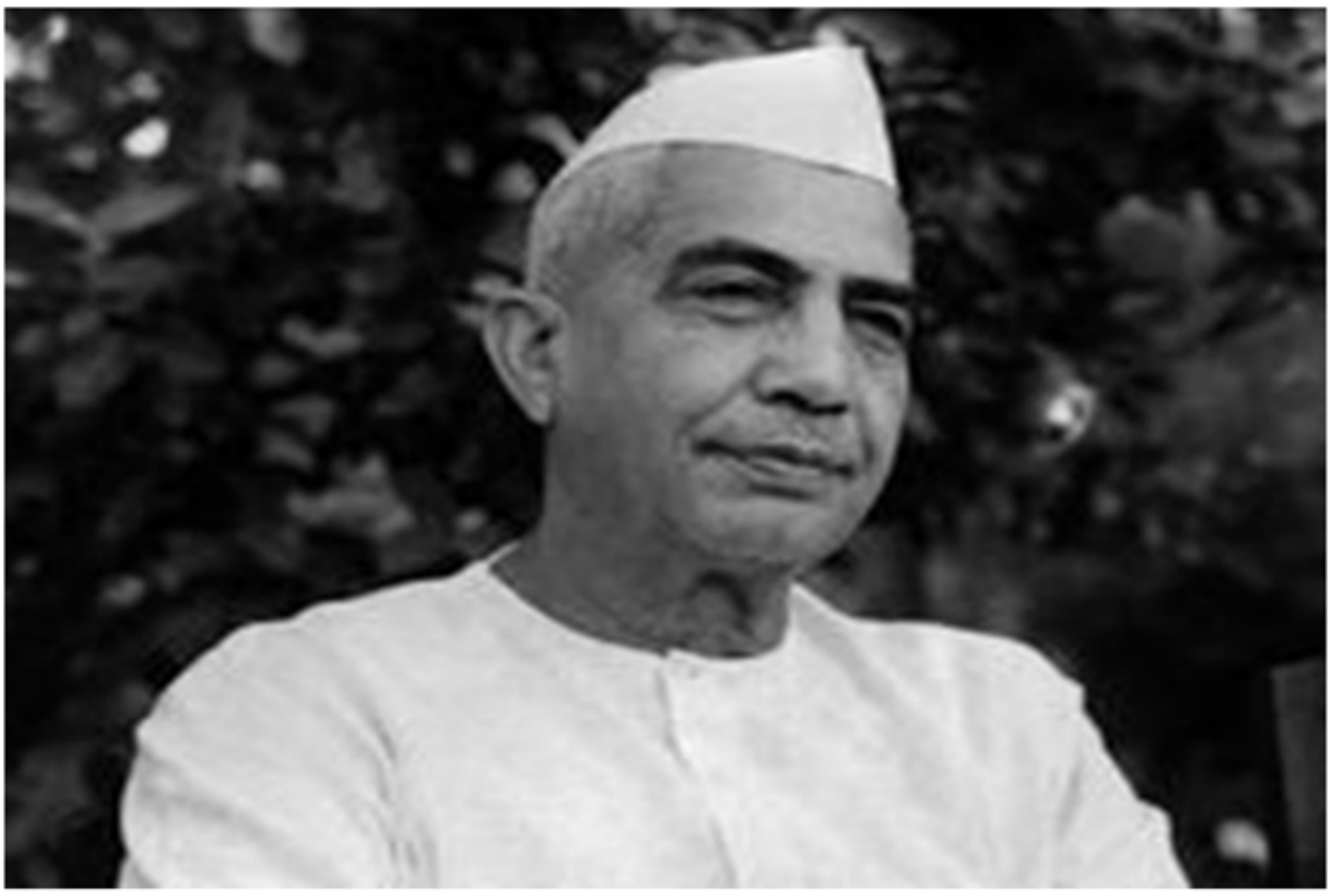

इस किताब को मैनेजमेंट स्ट्रैटेजिस्ट, रिसर्चर शशांक शाह ने लिखा है. (Representational Image)

भारत ने सत्तर के दशक के आखिर में पूर्ण कंप्यूटरीकृत टैक्स सिस्टम को लागू करने का एक गोल्डन चांस गंवाया था. टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (TCS) उस समय इस बारे में एक प्रस्ताव लाई थी, जिसे तत्कालीन वित्त मंत्री चौधरी चरण सिंह ने खारिज कर दिया था. यह दावा एक नई किताब में किया गया है. इस किताब का नाम 'द टाटा ग्रुप: फ्रॉम टॉर्चबियरर्स टु ट्रेलब्लेजर्स' (The Tata Group: From Torchbearers to Trailblazers) है.

इस किताब को मैनेजमेंट स्ट्रैटेजिस्ट, रिसर्चर शशांक शाह ने लिखा है. इस किताब को टाटा समूह के 150 साल पूरे होने और जेआरडी टाटा की पुण्यतिथि 29 नवंबर पर लॉन्च किया गया है. टाटा समूह के पूर्व चेयरमैन जेआरडी टाटा का जन्म 29 जुलाई 1904 में पेरिस में और निधन 29 नवंबर 2093 को जेनेवा में हुआ था.

लेखक शाह का कहना है कि इंदिरा गांधी सरकार ने 1969 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया था. उसके बाद बैंकों का कारोबार घटा था क्योंकि केंद्र भारत में कंप्यूटर नहीं चाहता था. किताब में कहा गया है कि ऐसा माना जाता था कि कंप्यूटरीकरण से बड़ी संख्या में बेरोजगारी की समस्या पैदा होगी.

ये भी पढ़ें...अच्छी प्लानिंग के साथ लागू नहीं हो पाई नोटबंदी, वर्ना कुछ और होते नतीजे: उदय कोटक

तो आज कई देशों से आगे होता भारत!

शाह ने लिखा है कि टीसीएस ने सबसे पहले 1977 में आयकर विभाग के लिए स्थायी खाता संख्या (PAN) प्रणाली विकसित की थी. इससे उत्साहित कंपनी को आयकर विभाग की समूची प्रक्रिया के कंप्यूटरीकरण का काम दिया गया था. लेकिन तत्कालीन वित्त मंत्री चौधरी चरण सिंह का मानना था कि वित्त मंत्रालय के कंप्यूटीकरण से बेरोजगारी की समस्या पैदा होगी. शाह का दावा है कि यदि उस समय इसे लागू कर लिया गया होता तो पूर्ण कंप्यूटरीकृत टैक्स सिस्टम के मामले में भारत आज कई देशों से आगे होता.

टाटा समूह के बारे में और भी कई खुलासे

किताब में टाटा समूह के बारे में कई और ऐसी बातें बताई गई हैं, जिनसे लोग अनजान हैं. किताब में इस बात का जिक्र है कि कैसे 1920 में नेताजी सुभाष चंद्र बोस और महात्मा गांधी ने टाटा स्टील के संयंत्रों में औद्योगिक सौहार्द कायम रखने में मदद दी. किताब में यह भी कहा गया है कि 1920 से 1924 में टाटा स्टील में तीन हड़तालें हुईं. उस समय किसी एक भारतीय इकाई में सबसे ज्यादा श्रमबल टाटा स्टील में ही था.